P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-7* March- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

ब्रज क्षेत्र में अप्रवासियों के परिवर्तित सामाजिक, व्यावहारिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रतिमानों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

बीरपाल सिंह ठैनुआं
असिस्टेण्ट प्रोफेसर,
समाज शास्त्र एवं राजनीति शास्त्र विभाग,
फैकल्टी ऑफ सोशल साइंस,
दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग,
आगरा

ज्योत्सना कुलश्रेष्ठ
पूर्व रिसर्च स्कोलर,
समाज विज्ञान विभाग,
डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय,
आगरा

दीपमाला श्रीवास्तव
डीन,
आर्ट्स विभाग,
डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा

सारांश

ब्रज क्षेत्र की सामाजिक संरचना में काफी समय से राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, अन्तर्जातीय, अप्रवासी समायोजित होते आये हैं और दिन प्रतिदिन समायोजित हो रहे हैं। जिससे अप्रवासियों के प्रवासी बनने से अनेक समस्याओं के जन्म के साथ–साथ ब्रज क्षेत्र का विकास भी हुआ है। जैसे अप्रवासियों और मूल निवासियों के बीच घनिष्ठ सामाजिक संबंध से क्षेत्रीय भिन्नता में एकता का स्वरूप भी देखने को मिलता है। ब्रज क्षेत्र में अप्रवासियों के सामाजिक, व्यावहारिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रतिमान अधिकतर परिवर्तित होने के साथ–साथ अनेकों समस्याएँ भी प्रकट हुई हैं।

मुख्य शब्द : अप्रवासी, उद्व्रजन, अप्रवासन, ब्रज ('व्रज्'), गतिशीलता, समायोजन, सामाजिक प्रतिमान, व्यावहारिक प्रतिमान, धार्मिक प्रतिमान, सांस्कृतिक प्रतिमान।

प्रस्तावना

ब्रज क्षेत्र में बसे अप्रवासी जिनमें बंगाल, मणिपुर, असम एवं अन्तर्राष्ट्रीय (अमेरिका, फ्रांस) आदि से यहाँ आये हैं। जिसके प्रभाव से यहाँ की आबादी का धनत्व बढ़ने के साथ–साथ इस क्षेत्र की पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, औद्योगिक, राजनैतिक, धार्मिक, व्यावहारिक आदि प्रतिमान परिवर्तित हुए हैं तथा अनेकों समस्याएँ पनपी हैं। साथ ही भविष्य के लिये ये समस्यायें एक भयानक रूप लेती प्रतीत हो रही है। क्योंकि उनकी बढ़ती संख्या से इस क्षेत्र की जनता की दैनिक समस्यायें जैसे–महँगाई, पर्यावरण, भिक्षावृत्ति, स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक अनुशासन, व्याभिचार आदि भयानक रूप लेती जा रही है। इन्हीं उपरोक्त समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए यह शोध इन समस्याओं के निराकरण हेतु यहाँ की भौगोलिक, एतिहासिक,सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, व्यावहारिक आदि बिन्दुओं पर यहाँ के प्रवासियों और अप्रवासियों के परिवारों में सम्पर्क स्थापित कर समस्याओं की तह तक पहुँचने का प्रयास किया गया है।

समस्या का कथन

ब्रज क्षेत्र में अप्रवासियों के परिवर्तित सामाजिक, धार्मिक, व्यावहारिक एवं सांस्कृतिक प्रतिमान से उत्पन्न समस्याओं, कारणों, परिणामों, हानि–लाभ एवं इनके सुझावों को ध्यान में रखते हुए ही इस समस्या का चयन किया गया है।

साहित्यावलोकन

एक स्थान से दूसरे स्थान पर जोर स्थाई और अस्थाई रूप से बस जाने को लेकर अनेक अध्ययन हुए हैं इनमें भगत (2010 व 2017), फिकरत तथा काया (2010), गिल और इरा (2010), मेकफरसन (2000), दिनेशप्पा तथा श्रीनिवास (2014), बेबी (2003), तूरनी (2016) आदि प्रमुख हैं। इन अध्ययनों के अवलोकन से स्पष्ट हुआ कि अप्रवास एक उभरती हुई घटना है यह केवल स्थानीय संस्कृति को प्रभावित ही नहीं वरन् अनेकों समस्याओं को जन्म भी देती है। अप्रवासी केवल स्थनीय संस्कृति से प्रभावित ही नहीं होते वरन् कभी–कभी स्थानीय संस्कृति को प्रभावित भी करते हैं तथा विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य ब्रज क्षेत्र के अप्रवासियों के परिवर्तित सामाजिक प्रतिमानों का अध्ययन करना है।

अध्ययन के अन्य उद्देश्य इस प्रकार हैं–

1. ब्रज क्षेत्र में परिवर्तित व्यावहारिक प्रतिमानों का अध्ययन करना।
2. ब्रज क्षेत्र में परिवर्तित सांस्कृतिक प्रतिमानों का अध्ययन करना।

3. ब्रज क्षेत्र में परिवर्तित सांस्कृतिक एवं धार्मिक प्रतिमानों के मध्य सम्बन्ध स्थापित करना।

शोध प्ररचना

अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए वर्णनात्मक प्ररचना का चयन किया गया है।

ब्रज क्षेत्र

ब्रज शब्द संस्कृत धातु 'व्रज्' से बना है। जिसका अर्थ गतिशीलता है। 'व्रजन्ति गावोयस्मिन्नति व्रज'–जहाँ गौं नित्य चलती अथवा चरती हैं, वह स्थान ब्रज कहा गया है। इसी संस्कृत शब्द, 'व्रज' से हिन्दी रूप ब्रज बना है। कुछ विद्वानों ने ब्रज के नामकरण की निम्न सम्भावनायें भी प्रकट की हैं।

1. बौद्धकाल में मथुरा के निकट 'बेरज' नामक स्थान था, कुछ विद्वानों की प्रार्थना पर गौतम बुद्ध यहाँ पधारे थे, वह स्थान 'वेरज' ही कदाचित कालांकर में 'विरज' ब्रज के नाम से प्रसिद्ध हो गया।
2. यमुना को 'विरजा' भी कहा जाता है। विरजा का क्षेत्र होने से मथुरा मंडल विरज या ब्रज कहा जाने लगा।

ऐसा प्रतीत होता है कि जनपद या प्रदेश के अर्थ में ब्रज का व्यापक प्रयोग ई0 चौदहवीं शदी के बाद से प्रारम्भ हुआ। इस प्रकार हम देखते हैं कि ब्रज शब्द का काल क्रमानुसार अर्थ विकास हुआ है। इस समस्त भू–भाग के प्राचीन नाम मधुवन, सूरसैन, ब्रज या ब्रज मण्डल है। यद्यपि इनके अर्थ बोध और आकार प्रकार में समय–समय पर अंतर होता रहा है। इस भू–भाग की धार्मिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक परम्परा अत्यन्त गौरवपूर्ण रही है।

ब्रज अति प्राचीन काल से एक सुप्रसिद्ध क्षेत्र रहा है, यहाँ की मौलिक संस्कृति का आधार और इसकी मूल चेतना भी धर्म ही है। अतः यह एक धार्मिक संस्कृति है। ब्रज को गौरव प्राप्त है यहाँ पर भारत के प्रायः सभी प्रमुख धर्म सम्प्रदाओं का विकास हुआ था और यहाँ की धार्मिक संस्कृति ने विभिन्न कालों में देश–विदेश के अधिकांश भागों को प्रभावित किया था।

ब्रज क्षेत्र में अप्रवासियों के परिवर्तित, सामाजिक, व्यावहारिक, धार्मिक, पारिवारिक एवं सांस्कृतिक प्रतिमान

प्रस्तुत अध्ययन में अप्रवासियों के परिवर्तित सामाजिक, व्यावहारिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रतिमानों के संबन्ध जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया गया है। जैसे कि अप्रवासी वर्ग ने अपने मूल स्थान से आने के बाद नाम परिवर्तित किया है कि नही? यदि किया है तो क्यों? किससे प्रभावित होकर? ब्रजवासियों के बीच सामाजिक सम्बन्ध कैसे हैं? सौहार्दपूर्ण या आन्तरिक दूरी, सौहार्दपूर्ण है तो क्यों किस प्रकार से और आन्तरिक दूरी ह? तो क्यों? आप ब्रजवासी परिवार में से विवाह के पक्ष में हैं कि नहीं? यदि हैं तो क्यों? नहीं है तो क्या?, आपके परिवर्तित सामाजिक प्रतिमान क्या हैं? सांस्कृतिक प्रतिमान में क्या आप ब्रज संस्कृति को अपना रहे हैं? ब्रज के कौन–कौन से त्योहारों एवं उत्सवों को अपनाते हैं? परिवर्तित धार्मिक प्रतिमान क्या है और व्यवहारिक प्रतिमान क्या है? अतः आप किस संस्कृति से प्रभावित हैं? स्वयं की संस्कृति या ब्रज क्षेत्र की या फिर दोनों की? प्रस्तुत अध्ययन में अप्रवासियों की पारिवारिक संरचना का भी अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। पारिवारिक संरचना से तात्पर्य विवाह की प्रकृति, रहन–सहन का स्तर परिवार का आकार–प्रकार और परिवार की प्रकृति। अतः जब कोई व्यक्ति अपने स्वयं के स्थान, प्रान्त या देश दूसरे स्थान पर आकर बस जाता है तो अप्रवासी नाम की संज्ञा दी जाती है। ब्रज क्षेत्र में अप्रवासियों के प्रवासी बनने से अप्रवासियों के सामाजिक, व्यावहारिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रतिमान अधिकतर परिवर्तित हुये हैं। क्योंकि कोई भी व्यक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर जब बसता है तो उसे वहाँ की सामाजिक संरचना में घनिष्ट सामाजिक सम्बन्ध बनाने पड़ते हैं। उसे सामंजस्य हेतु अपले सामाजिक, सांस्कृतिक प्रतिमानों परिवर्तित करने पड़ते हैं और उन्हें स्थानीय प्रतिमानों को स्वीकारना पड़ता है।

परिवर्तित सामाजिक, व्यावहारिक प्रतिमान

अप्रवासियों के परिवर्तित सामाजिक एवं व्यावहारिक प्रतिमानों को विभिन्न रूपों में दर्शाया गया है। जैसे– अप्रवासियों द्वारा नाम परिवर्तन किया जाना। ज्यादातर नाम परिवर्तन करने वालों में नाम परिवर्तन का कारण गुरू की आज्ञा का पालन करना या भक्ति से प्रभावित होकर अपना नाम परिवर्तन किया है। अतः अप्रवासियों और ब्रजवासियों में अधिकतर सम्बन्ध सौहार्द पूर्ण हैं। जैसे कि धार्मिक अनुष्ठानों में जाना–आना, सामाजिक सांस्कृतिक समारोहों में शामिल होना, खान–पान, पारस्परिक विवाह सम्बन्ध, आर्थिक लेन–देन आदि के सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण हैं। अतः ज्यादातर अप्रवासियों से ब्रजवासियों के बहुत ही मधुर सम्बन्ध हैं।

अध्ययन के आधार पर स्पष्ट हुआ है कि सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध होने के साथ ही अप्रवासियों और ब्रजवासियों के मध्य आन्तरिक दूरी बनी हुई है। जिसका मुख्य कारण ''क्षेत्रीय भिन्नता'' है। सामाजिक परिवर्तित प्रतिमानों के अन्तर्गत अप्रवासियों में ज्यादातर स्थानीय लोगों के साथ विवाह के पक्ष में नहीं हैं। कुछ अप्रवासी बाल विवाह में कमी आना स्वीकारते हैं तो कुछ विधवा अपशकुन में भी कमी आयी है, पर्दा प्रथा में भी कमी आयी है, सती प्रथा में भी कमी आना स्वीकारते हैं तथा वे पुनः विधवा विवाह अपनाने के पक्ष में हैं। लिंग भेद में भी सुधार हुआ है। भाषा, वेश भूषा, रहन–सहन, खान–पान, व्यवसाय, शिक्षा एवं अन्य, व्यावहारिक प्रतिमान एवं सामाजिक प्रतिमानों में परिवर्तन आना स्वीकारते हैं। जिन्हें कि निम्न तालिका द्वारा दर्शाया गया है –

तालिका –1
परिवर्तित सामाजिक प्रतिमान

क्र.सं.	प्रतिमान	संख्या	प्रतिशत %
1	बाल विवाह में कमी	126	36%
2	विधवा अपशकुन की समाप्ति	105	30%
3	विधवा विवाह की स्वीकारोक्ति	62	18%
4	पर्दा प्रथा में कमी	37	11%
5	अन्य	12	3%
6	लड़का–लड़की में समानता आना	5	1%
7	सती प्रथा में कमी	3	1%
8	योग	350	100%

उपरोक्त तालिका 1 में अप्रवासियों के परिवर्तित सामाजिक प्रतिमानों को विभिन्न रूपों में दर्शाया गया है। 350 सूचनादाताओं में से सर्वाधिक 37 (11%) सूचनादाता बाल विवाह में कमी आना स्वीकारते हैं तत्पश्चात् 105 (30%) सूचनादाता विधवा अपशकुलन में कमी आना मानते हैं। 62 (18%) विधवा विवाह अपनाने के पक्ष में है। पर्दाप्रथा में कमी 5(1%), लड़का–लड़की में समानता 5(1%), सती प्रथा में कमी 3(1%) और 12 (3%) अन्य सामाजिक प्रतिमानों में परिवर्तन आना स्वीकारते हैं।

तालिका –2

परिवर्तित व्यावहारिक प्रतिमान

क्र.सं.	प्रतिमान	संख्या	प्रतिशत %
1	भाषा	100	28%
2	वेश–भूषा	63	18%
3	रहन–सहन	60	17%
4	खान–पान	60	17%
5	व्यवसाय	52	16%
6	शिक्षा	5	1%
7	अन्य	10	3%
8	योग	350	100%

उपरोक्त तालिका '2' में अप्रवासियों के ब्रज में परिवर्तित व्यावहारिक प्रतिमानों का विश्लेषण कर दर्शाया गया है। 350 अप्रवासी सूचनादाताओं में से सर्वाधिक 100 (28%) भाषा के रूप में, तत्पश्चात 63(18%) वेश–भूषा के रूप में, 60–60 (17%–17%) क्रमशः रहन–सहन व खान–पान के रूप में, 52(16%) व्यवसाय के रूप में, 5(1%) शिक्षा के रूप में व 10(3%) अन्य रूपों में अपने व्यावहारिक प्रतिमान परिवर्तित कर चुके हैं।

परिवर्तित सांस्कृतिक एवं धार्मिक प्रतिमान

अप्रवासियों के परिवर्तित सांस्कृतिक एवं धार्मिक प्रतिमानों को इस प्रकार स्पष्ट किया गया है कि। अधिकतर अप्रवासी माँसाहारी से शाकाहारी होने में लगभग सभी धार्मिक भावनाओं, धार्मिक स्थल, गुरू की आज्ञा, जैसे प्रेरणा श्रोतों को मुख्य आधार मानते हैं। माँसाहारी से शाकाहारी बनने में प्रवासियों का लगभग एक वर्ष का समय लगा। अधिकतर अप्रवासी ब्रज के त्योहारों, धार्मिक उत्सवों जैसे कि होली, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, गोवर्धन पूजा, राधा अष्टमी, हरियाली तीज, रक्षा बन्धन, भाई दूज एवं अन्य उत्सवों में आस्था रखकर अपने सांस्कृतिक एवं धार्मिक प्रतिमान परिवर्तित कर चुके हैं।

तालिका –3

परिवर्तित सांस्कृतिक प्रतिमान

क्र.सं.	प्रतिमान	संख्या	प्रतिशत %
1	ब्रज के त्योहारों की स्वीकारोक्ति	183	52%
2	ब्रज के धार्मिक उत्सवों की स्वीकारोकित	72	21%
3	ब्रज की अन्य परम्परायें मानना	55	16%
4	ब्रज के वैवाहिक रीति रिवाजों का अपनाना	40	11%
5	योग	350	100%

उपरोक्त तालिका 3 परिवर्तित सांस्कृतिक प्रतिमानों को स्पष्ट करती है। 350 अप्रवासी सूचनादाताओं में से सर्वाधिक 183 (52%) ब्रज के त्योहारों में आस्था रखते हैं, 72 (21%) सूचनादाता ब्रज के धार्मिक उत्सवों को मान्यता देते हैं, 55 (16%) ब्रज की अन्य परम्पराओं को मानते हैं तथा 40 (11%) ब्रज के वैवाहिक रीति रिवाजों को मानकर सांस्कृतिक प्रतिमानों में परिवर्तन आना स्वीकारते हैं।

अतः अध्ययन से स्पष्ट है कि लगभग आधे सूचनादाता ब्रज के त्योहारों में आस्था रखकर अपने सांस्कृतिक प्रतिमान परिवर्तित कर चुके हैं और लगभग एक चौथाई ब्रज के धार्मिक उत्सवों को मान्यता देकर अपने प्रतिमानों में परिवर्तन ला चुके हैं।

तालिका –4

परिवर्तित धार्मिक प्रतिमान

क्र.सं.	प्रतिमान	संख्या	प्रतिशत %
1	श्रीकृष्ण में अधिक आस्था	155	44%
2	ब्रज भूमि में आस्था	160	46%
3	ब्रज उत्सवों की मान्यता	22	6%
4	अन्य	13	4%
	योग	350	100%

उपरोक्त तालिका 4 अप्रवासियों द्वारा ब्रज क्षेत्र में परिवर्तित धार्मिक प्रतिमानों का विवरण को स्पष्ट करती है। 350 सूचनादाताओं में से सर्वाधिक 160 (46%) ब्रज भूमि में आस्था रखते हैं तत्पश्चात् 155 (44%) श्रीकृष्ण भगवान में अधिक आस्था रखते हैं। 22(6%) ब्रज के उत्सवों को मान्यता देकर तथा 13(4%) अन्य धार्मिक आयोजनों को अपनाकर अपने प्रतिमान परिवर्तित कर चुके हैं।

1. अधिकांश अप्रवासियों ने (80%) नाम परविर्तन किया है जिसमें (47%) ने गुरू की आज्ञा से नाम परिवर्तन किया है।
2. 50% अप्रवासियों के ब्रजवासियों के बीच सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध बताये हैं। जो कि 41% धार्मिक अनुष्ठानों में आने–जाने की वजह से सौहार्दपूर्ण है।
3. 42% अप्रवासियों के ब्रजवासियों के साथ असौहार्दपूर्ण सम्बन्ध क्षेत्रीय भिन्नता के कारण हैं।
4. अधिकांश अप्रवासी (93%) शाकाहारी भोजन ग्रहण करते हैं जो कि (45%) गुरू की आज्ञा द्वारा ग्रहण करते हैं और (78%) को एक वर्ष का समय शाकाहारी बनने में लगा।
5. अधिकांश अप्रवासी परिवर्तित सांस्कृतिक प्रतिमान में (52%) ब्रज के त्योहारों को मानते हैं जो कि (48%) होली को अवश्य मानते हैं।
6. अधिकांश अप्रवासी (60%) ब्रजवासी परिवार में से विवाह के पक्ष में नहीं हैं और 40% विवाह के पक्ष में हैं जिससे सामाजिक प्रतिमान परिवर्तित हुए हैं जो कि 36% बाल विवाह में कमी स्वीकारते हैं।
7. अप्रवासी परिवर्तित धार्मिक प्रतिमान में से 46% ब्रजभूमि में आस्था रखते हैं।

8. अप्रवासी परिवर्तित व्यावहारिक प्रतिमान में (28%) भाषा से प्रभावित हैं जो कि (79%) ब्रज संस्कृति को मानते हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र में ''ब्रज क्षेत्र को सामाजिक संरचना में अप्रवासियों के परिवर्तित सामाजिक, व्यावहारिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रतिमानों'' को स्पष्ट किया गया है। ब्रज क्षेत्र को सामाजिक संरचना में सैकड़ों वर्षों से राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय अप्रवासी समायोजित होते आये हैं जिससे सामाजिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं धार्मिक ब्रज क्षेत्रीय संस्कृति अप्रवासियों द्वारा पूर्ण तया अपनायी जा रही हैं जिससे ब्रज क्षेत्रीय संस्कृति पर अनुकूल एवं प्रतिकूल प्रभाव हुए हैं। ब्रज क्षेत्र में प्रवास के लिये बाह्य प्रदेशों से आये अप्रवासियों में अत्यधिक संख्या बंगाली अप्रवासियों की है जो कि किसी भी जाति या धर्म के होने पर भी मात्र यहाँ तो 'श्रीकृष्ण' के भक्त के रूप में अपनी पहचान बना रहे हैं। साक्षात्कार अनुसूची द्वारा प्राप्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि बंगाली के अतिरिक्त मणिपुर, आसाम, बिहार आदि क्षेत्रों के अप्रवासी भी हैं। बंगाल में या अन्य क्षेत्रों में गरीबी, वेरोजगारी, मंहगाई एवं अन्य समस्यायें अधिक हैं इसलिए भी अप्रवासी अपनी उदरपूर्ति और साथ ही भक्ति एवं शान्ति के लिये आते हैं। वैसे बाह्य रूप से देखा जाये तो अधिक संख्या में अप्रवासी धार्मिक भावना को ही ब्रज क्षेत्र में आने का मुख्य कारण मानते हैं। ब्रज क्षेत्र में कृष्णकाल के पहले से लेकर वर्तमान युग में अप्रवासियों का आवागमन होता आया है। जिससे ब्रज क्षेत्र की संस्कृति से प्रभावित होकर अप्रवासियों के सामाजिक, व्यावहारिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रतिमान परिवर्तित हुये हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Ackoff, R.L. (1953). The Design of Social Research. The University of Chicago Press, London.*
2. *Baby (2003). Economics of Sabari Pilgrimage with Special Reference to the Householders in Erumely Gram Panchayat. Kerala Research Programme on Local Level Development. Centre for Development Studies Thiruvananthapuram.*
3. *Bhagat, R.B. (2010). Internal Migration in India: Are the Underprivileged Migrating More? Asia Pecific Population Journal. June 2010.*
4. *Bhagat, R.B. (2017). Migration and Urban Transition in India: Implications for Development. United Nations Expert Group Meeting onSustainable Civities. Human Mobilities and International Migration. Department of Ecomomic and Social Affairs U N Secretariat. New York*
5. *Dineshappa & Sreenivasa, K.N. (2014). The Social Impact of Migration in India. International Journal of Humanities and Social Science Invention.Vol. 3. Issue 5. May 2014.*
6. *Gil, S. E. & Ira, N. G. (2010). Migration and Culture. Discussion Paper No. 5/23, Aug. 2010. IZA, Bonn Germany.*
7. *Macpherson, C. (2000). Some Social and Economic Consequences of Migration. A Curriculum Paper for Samoa. Paper for UNESCO, Social Science Programme.*
8. *Susan, Lewandowski (1980) Migration and Ethnicity in Urban India, Kerala Migrants in the city of Madras (1870-1990) Manohar Publication, New Delhi.*
9. *Turrey, A.A. (2016). An Analysis of Internal Migration Types in India in Purview of its Social and Economic Impacts. EPRA International Journal of Economic and Business Review, Vol. 4. Issue 1, Jan 2016.*
10. *बाजपेयी, कृष्ण दत्त (1955) 'ब्रज का इतिहास', बैजनाथ दानी प्रकाशन, मथुरा, पृ0सं0– 1–2*
11. *कुमार, आनन्द एवं गुप्ता, एम.डी. (1990), उच्चतर समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, विमल प्रकाशन मन्दिर, आगरा पृ.स. 49–50*
12. *मीतल, प्रभूदयाल (1966) ''ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास,'' राजकमल प्रकाशन, दिल्ली–6 पटना–6 पृ. स. 1–6*